IOSR Journal of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 25, Issue 3, Series. 1 (March. 2020) 26-32
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

चौरी-चौरा कांड में महिला भूमिका: लिंग, श्रम और प्रतिरोध का विश्लेषण

सुभाष कुमार दास[1], डॉ. थल्लापल्ली मनोहर[2]

[1]*शोध छात्र, इतिहास विभाग, अर्णि विश्वविद्यालय, इंदौरा, कांगड़ा (हि.प्र.), भारत*

[2]प्रोफेसर, इतिहास विभाग, अर्णि विश्वविद्यालय, इंदौरा, कांगड़ा (हि.प्र.), भारत

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका को प्रायः उपेक्षित किया गया है, विशेषकर ग्रामीण महिलाओं के योगदान को। 4 फरवरी 1922 को गोरखपुर जनपद के चौरी-चौरा में हुई ऐतिहासिक घटना में महिलाओं की भागीदारी का अध्ययन इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है। यह शोध लिंग, श्रम और प्रतिरोध के त्रिकोणीय संबंध का विश्लेषण करता है। ऐतिहासिक अभिलेखों, न्यायिक दस्तावेजों, समकालीन समाचार पत्रों और मौखिक इतिहास के स्रोतों का उपयोग करते हुए यह अध्ययन प्रस्तुत करता है कि चौरी-चौरा की घटना में महिलाओं ने प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूपों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जुलूस में भाग लेने, नारे लगाने, पुरुषों को प्रोत्साहित करने और घायलों की सेवा करने में महिलाएं अग्रणी थीं। हालांकि, औपचारिक अभिलेखों में उनकी उपस्थिति को पर्याप्त रूप से दर्ज नहीं किया गया। यह शोध औपनिवेशिक काल में ग्रामीण महिलाओं की राजनीतिक चेतना, उनके श्रम के स्वरूप और प्रतिरोध के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करता है। निष्कर्ष बताते हैं कि चौरी-चौरा में महिलाओं की भूमिका केवल सहायक नहीं थी, बल्कि वे प्रतिरोध की संस्कृति का अभिन्न अंग थीं।

कीवर्ड: *चौरी-चौरा, महिला भूमिका, लिंग विश्लेषण, ग्रामीण प्रतिरोध, असहयोग आंदोलन, स्त्री श्रम, औपनिवेशिक भारत, स्वतंत्रता संग्राम।*

परिचय

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास लिखते समय महिलाओं की भूमिका को प्रायः हाशिए पर रखा गया है। राष्ट्रीय आंदोलन के मुख्यधारा के इतिहास में सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, और विजयलक्ष्मी पंडित जैसी कुछ प्रमुख महिलाओं का उल्लेख तो मिलता है, परंतु ग्रामीण और निम्न वर्गीय महिलाओं का योगदान लगभग अदृश्य रहा है [1]। यह उपेक्षा विशेष रूप से चौरी-चौरा जैसी घटनाओं के संदर्भ में देखी जा सकती है, जहां महिलाओं की भागीदारी को ठीक से दर्ज नहीं किया गया।

4 फरवरी 1922 को गोरखपुर जनपद के चौरी-चौरा में जो घटना घटी, वह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इस दिन लगभग तीन हजार किसानों की भीड़ ने स्थानीय पुलिस थाने पर हमला किया, जिसमें 22 पुलिसकर्मी मारे गए [2]। इस घटना के परिणामस्वरूप महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन को स्थगित कर दिया। परंतु इस घटना में महिलाओं की भूमिका क्या थी? क्या वे केवल दर्शक थीं या सक्रिय भागीदार? यह प्रश्न इतिहासकारों के लिए महत्वपूर्ण है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य चौरी-चौरा कांड में महिलाओं की भूमिका का विस्तृत विश्लेषण करना है। यह अध्ययन लिंग (जेंडर), श्रम और प्रतिरोध के परस्पर संबंधों की पड़ताल करता है [3]। इस शोध में निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास किया गया है: चौरी-चौरा की घटना में महिलाओं की क्या भूमिका थी? ग्रामीण महिलाओं की राजनीतिक चेतना किस प्रकार विकसित हुई? और महिलाओं के श्रम एवं प्रतिरोध के बीच क्या संबंध था?

यह शोध इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारतीय इतिहास लेखन में लिंग आधारित दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है। परंपरागत इतिहास लेखन में पुरुष केंद्रित दृष्टिकोण हावी रहा है, जिसमें महिलाओं को निष्क्रिय और सहायक के रूप में देखा गया [4]। यह शोध इस धारणा को चुनौती देता है और ग्रामीण महिलाओं की एजेंसी (कर्तृत्व शक्ति) को रेखांकित करता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

औपनिवेशिक काल में ग्रामीण महिलाओं की स्थिति

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में भारतीय ग्रामीण महिलाओं की स्थिति अत्यंत कठिन थी। वे दोहरे शोषण का शिकार थीं - एक ओर पितृसत्तात्मक समाज का दमन और दूसरी ओर औपनिवेशिक शासन का आर्थिक शोषण [5]। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं कृषि कार्यों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करती थीं, परंतु उनके श्रम को मान्यता नहीं मिलती थी। वे घरेलू कार्य, पशुपालन, और खेती में सहायता करती थीं, फिर भी उन्हें 'अनउत्पादक' माना जाता था।

गोरखपुर क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति विशेष रूप से कठिन थी। यहां की अधिकांश महिलाएं कृषक परिवारों से थीं जो आर्थिक संकट से जूझ रहे थे [6]। तालुकदारी व्यवस्था और भारी लगान के कारण किसान परिवार ऋण के बोझ तले दबे थे। इस आर्थिक संकट का सबसे अधिक प्रभाव महिलाओं पर पड़ा। उन्हें कम भोजन मिलता था, स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध नहीं थीं, और शिक्षा तो दूर की बात थी।

जाति व्यवस्था ने महिलाओं की स्थिति को और जटिल बना दिया था। निम्न जातियों की महिलाओं को न केवल लिंग आधारित भेदभाव का सामना करना पड़ता था, बल्कि जातिगत उत्पीड़न भी सहना पड़ता था [7]। वे उच्च जातियों के पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा अपमानित होती थीं। इस दोहरे उत्पीड़न ने उनमें गहरा असंतोष पैदा किया था।

तालिका 1: गोरखपुर जनपद में महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति (1921)

संकेतक	महिला	पुरुष
साक्षरता दर (%)	0.8	6.2
कृषि श्रम में भागीदारी (%)	68.5	72.3
भूमि स्वामित्व (%)	2.1	45.6
औसत दैनिक मजदूरी (आना)	2-3	4-6

स्रोत: जनगणना रिपोर्ट 1921, गोरखपुर गजेटियर [8]

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि महिलाओं और पुरुषों के बीच गहरी असमानता थी। महिलाओं की साक्षरता दर अत्यंत निम्न थी (0.8%), जबकि भूमि स्वामित्व में उनकी हिस्सेदारी नगण्य थी। इसके बावजूद, कृषि श्रम में उनकी भागीदारी पुरुषों के लगभग बराबर थी। यह विरोधाभास ग्रामीण महिलाओं के शोषण को स्पष्ट करता है।

असहयोग आंदोलन और महिलाएं

1920 में महात्मा गांधी द्वारा प्रारंभ किया गया असहयोग आंदोलन भारतीय महिलाओं के लिए एक नया अवसर लेकर आया। गांधीजी ने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया [9]। उन्होंने कहा कि स्वराज की लड़ाई केवल पुरुषों की नहीं है, बल्कि इसमें महिलाओं की भागीदारी अनिवार्य है। इस संदेश का गहरा प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों पर भी पड़ा।

गोरखपुर क्षेत्र में असहयोग आंदोलन को व्यापक समर्थन मिला। स्थानीय कांग्रेस नेताओं ने गांवों में जाकर प्रचार किया और महिलाओं को भी इस आंदोलन में शामिल होने का आह्वान किया [10]। महिलाओं ने विदेशी कपड़ों के बहिष्कार में भाग लिया, चरखा कातने को अपनाया, और शराब की दुकानों के सामने धरना दिया। यह उनके लिए एक नया अनुभव था क्योंकि पहले वे घर की चारदीवारी तक सीमित थीं।

8 फरवरी 1921 को जब गांधीजी गोरखपुर आए तो हजारों महिलाओं ने उनका स्वागत किया। उन्होंने अपने आभूषण उतारकर स्वराज कोष में दान दिए [11]। यह घटना दर्शाती है कि गांधीजी की अपील का ग्रामीण महिलाओं पर कितना गहरा प्रभाव पड़ा था। उन्होंने गांधी को एक अवतारी पुरुष के रूप में देखा जो उन्हें शोषण और अन्याय से मुक्त कराएगा।

शोध पद्धति

यह शोध ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है और इसमें लिंग आधारित विश्लेषण (जेंडर एनालिसिस) का उपयोग किया गया है। प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है [12]।

प्राथमिक स्रोतों में निम्नलिखित शामिल हैं: (क) चौरी-चौरा मुकदमे की कार्यवाही और गवाहों के बयान; (ख) ब्रिटिश प्रशासनिक अभिलेख जो उत्तर प्रदेश राज्य अभिलेखागार, लखनऊ में संग्रहीत हैं; (ग) समकालीन हिंदी और अंग्रेजी समाचार पत्र जैसे 'आज', 'प्रताप', और 'द पायनियर'; (घ) 1921 की जनगणना रिपोर्ट [13]।

द्वितीयक स्रोतों में शाहिद अमीन की पुस्तक 'इवेंट, मेटाफर, मेमोरी: चौरी चौरा 1922-1992', ज्ञानेंद्र पांडेय के शोध, और अन्य इतिहासकारों के कार्य शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, सबाल्टर्न स्टडीज समूह के विद्वानों के कार्यों का भी उपयोग किया गया है [14]।

शोध में मौखिक इतिहास पद्धति का भी उपयोग किया गया है। चौरी-चौरा के प्रतिभागियों के वंशजों से साक्षात्कार किए गए हैं, जिनसे महिलाओं की भूमिका के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है। यद्यपि ये साक्षात्कार घटना के कई दशक बाद किए गए हैं, फिर भी ये स्थानीय स्मृति और परंपरा को समझने में सहायक हैं [15]।

विश्लेषण में नारीवादी इतिहास लेखन के सिद्धांतों का उपयोग किया गया है। इसके अंतर्गत महिलाओं की एजेंसी (कर्तृत्व शक्ति), उनके अनुभवों की विशिष्टता, और लिंग आधारित शक्ति संबंधों का विश्लेषण किया गया है [16]।

चौरी-चौरा में महिलाओं की भूमिका: विश्लेषण

4 फरवरी 1922 की घटना में महिलाओं की प्रत्यक्ष भागीदारी

4 फरवरी 1922 को चौरी-चौरा में जो जुलूस निकला, उसमें महिलाओं की भी उपस्थिति थी। मुकदमे के दस्तावेजों और गवाहों के बयानों के अनुसार, जुलूस में कई सौ महिलाएं शामिल थीं [17]। ये महिलाएं मुख्यतः आसपास के गांवों की किसान और खेतिहर मजदूर परिवारों से थीं। वे 'महात्मा गांधी की जय', 'स्वराज', और 'भारत माता की जय' के नारे लगा रही थीं।

जुलूस जब शराब की दुकान के पास पहुंचा तो महिलाओं ने विशेष उत्साह दिखाया। उन्होंने दुकान के बहिष्कार का आह्वान किया और ग्राहकों को शराब न पीने की अपील की [18]। यह उल्लेखनीय है क्योंकि शराब ग्रामीण महिलाओं के लिए एक गंभीर सामाजिक समस्या थी। शराबी पतियों की हिंसा और परिवार की आर्थिक बर्बादी से महिलाएं सबसे अधिक प्रभावित होती थीं।

जब पुलिस ने जुलूस पर लाठीचार्ज और गोलीबारी की, तो कई महिलाएं घायल हुईं। कुछ महिलाओं ने पुरुषों को प्रोत्साहित किया और उन्हें पीछे हटने से रोका [19]। एक गवाह के अनुसार, 'औरतें चिल्ला रही थीं कि मरो या मारो, पीछे मत हटो।' यह महिलाओं की सक्रिय भागीदारी का प्रमाण है।

तालिका 2: चौरी-चौरा घटना में महिलाओं की भागीदारी का विश्लेषण

भागीदारी का स्वरूप	अनुमानित संख्या/विवरण
जुलूस में भाग लेने वाली महिलाएं	300-500 (अनुमानित)
गोलीबारी में घायल महिलाएं	12-15 (रिपोर्टेड)
गिरफ्तार/अभियुक्त महिलाएं	0 (कोई नहीं)
मुकदमे में गवाही देने वाली महिलाएं	3-5 (अभिलेखों में उल्लिखित)

स्रोत: चौरी-चौरा मुकदमे के दस्तावेज, गवाहों के बयान [20]

उपरोक्त तालिका एक महत्वपूर्ण विरोधाभास को उजागर करती है। यद्यपि सैकड़ों महिलाएं जुलूस में शामिल थीं, फिर भी एक भी महिला को गिरफ्तार नहीं किया गया। इसके कई कारण हो सकते हैं: (क) औपनिवेशिक न्याय व्यवस्था में महिलाओं को 'अबोध' और 'अनुगामी' माना जाता था; (ख) पुरुष सत्ता ने महिलाओं की भूमिका को नगण्य माना; (ग) महिलाओं की भागीदारी को 'अराजनीतिक' समझा गया [21]।

महिलाओं का परोक्ष योगदान

चौरी-चौरा की घटना में महिलाओं का परोक्ष योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण था। घायलों की सेवा में महिलाएं अग्रणी थीं। जब पुलिस की गोलीबारी में कई प्रदर्शनकारी घायल हुए तो महिलाओं ने उनकी देखभाल की [22]। वे घायलों को अपने घरों में ले गईं, उनके घावों पर पट्टी बांधी, और उन्हें भोजन तथा पानी दिया।

घटना के बाद जब पुलिस ने आसपास के गांवों में छापे मारे तो महिलाओं ने अपने परिवार के पुरुषों को छिपाने में मदद की। कई महिलाओं ने अपने पतियों, बेटों और भाइयों को बचाने के लिए पुलिस से झूठ बोला [23]। यह उनका एक प्रकार का प्रतिरोध था, जो अहिंसक परंतु प्रभावी था।

मुकदमे के दौरान भी महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे जेल में बंद अपने परिजनों से मिलने जाती थीं और उन्हें आवश्यक सामग्री पहुंचाती थीं। कुछ महिलाओं ने अभियुक्तों के परिवारों की आर्थिक सहायता की [24]। इस प्रकार, महिलाओं ने प्रतिरोध की एक पूरी संस्कृति को बनाए रखने में योगदान दिया।

लिंग, श्रम और प्रतिरोध का त्रिकोणीय संबंध

चौरी-चौरा की घटना में लिंग, श्रम और प्रतिरोध के बीच एक जटिल संबंध देखा जा सकता है। ग्रामीण महिलाओं का श्रम घरेलू और कृषि दोनों क्षेत्रों में फैला हुआ था [25]। वे सुबह से रात तक काम करती थीं - खाना पकाना, बच्चों की देखभाल, पशुओं को चारा देना, खेतों में काम करना, और अनगिनत अन्य कार्य। इस श्रम के बावजूद उन्हें न तो आर्थिक स्वतंत्रता मिली और न सामाजिक सम्मान।

यह असंतोष उनके प्रतिरोध का आधार बना। जब असहयोग आंदोलन ने उन्हें एक मंच प्रदान किया तो उन्होंने अपनी आवाज उठाई [26]। शराब की दुकानों का बहिष्कार उनके लिए विशेष महत्व रखता था क्योंकि शराब उनके पारिवारिक जीवन को प्रभावित करती थी। इस प्रकार, उनका प्रतिरोध केवल राजनीतिक नहीं था, बल्कि यह उनकी रोजमर्रा की समस्याओं से भी जुड़ा था।

चित्र 1: लिंग, श्रम और प्रतिरोध का अंतर्संबंध मॉडल

लिंग आधारित भेदभाव (पितृसत्ता, शिक्षा की कमी, संपत्ति अधिकार का अभाव)
↓
अदृश्य/अवैतनिक श्रम (घरेलू कार्य, कृषि श्रम, देखभाल का कार्य)
↓
प्रतिरोध का उदय (आंदोलन में भागीदारी, नारे लगाना, बहिष्कार, सेवा कार्य)

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा विकसित मॉडल

विमर्श

महिलाओं की अदृश्यता: कारण और परिणाम

चौरी-चौरा की घटना में महिलाओं की भागीदारी होने के बावजूद वे आधिकारिक अभिलेखों में लगभग अदृश्य हैं। इस अदृश्यता के कई कारण हैं। प्रथम, औपनिवेशिक अभिलेख पुरुष केंद्रित थे और महिलाओं को स्वतंत्र राजनीतिक कर्ता के रूप में नहीं देखा जाता था [27]। ब्रिटिश प्रशासक भारतीय महिलाओं को 'पर्दानशीन' और 'अशिक्षित' मानते थे, जो राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय नहीं हो सकतीं।

द्वितीय, भारतीय पितृसत्तात्मक समाज ने भी महिलाओं की भूमिका को कम करके आंका। जब गिरफ्तारियां हुईं तो परिवार के पुरुष सदस्यों ने महिलाओं को बचाने का प्रयास किया [28]। यह सुरक्षात्मक व्यवहार था, परंतु इसका परिणाम यह हुआ कि महिलाओं की भागीदारी का कोई आधिकारिक रिकॉर्ड नहीं बना।

तृतीय, राष्ट्रवादी इतिहास लेखन ने भी इस उपेक्षा को जारी रखा। स्वतंत्रता के बाद जो इतिहास लिखा गया, उसमें भी चौरी-चौरा में महिलाओं की भूमिका पर ध्यान नहीं दिया गया [29]। शहीदों की सूची में केवल पुरुषों के नाम हैं और स्मारकों पर भी महिलाओं का उल्लेख नहीं है।

ग्रामीण महिलाओं की राजनीतिक चेतना

चौरी-चौरा की घटना ग्रामीण महिलाओं की राजनीतिक चेतना के विकास का भी प्रमाण है। यह चेतना केवल गांधीजी के प्रभाव से नहीं उत्पन्न हुई थी, बल्कि यह उनके अपने अनुभवों से भी विकसित हुई थी [30]। आर्थिक शोषण, सामाजिक अन्याय, और जातिगत भेदभाव ने उनमें असंतोष पैदा किया था। असहयोग आंदोलन ने इस असंतोष को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान किया।

महिलाओं की राजनीतिक चेतना में 'स्वराज' की अवधारणा का विशेष स्थान था। परंतु उनके लिए स्वराज का अर्थ केवल ब्रिटिश शासन से मुक्ति नहीं था [31]। उनके लिए स्वराज का अर्थ था - पति की हिंसा से मुक्ति, शराब की बुराई से मुक्ति, और आर्थिक शोषण से मुक्ति। इस प्रकार, उनकी राजनीतिक चेतना उनकी रोजमर्रा की समस्याओं से जुड़ी थी।

सीमाएं और चुनौतियां

इस शोध की कुछ सीमाएं हैं। प्रथम, प्राथमिक स्रोतों में महिलाओं के बारे में जानकारी अत्यंत सीमित है। अधिकांश अभिलेख पुरुषों द्वारा और पुरुषों के बारे में लिखे गए हैं [32]। द्वितीय, मौखिक इतिहास के स्रोत घटना के कई दशक बाद संग्रहीत किए गए हैं, जिनमें स्मृति की त्रुटियां हो सकती हैं। तृतीय, जाति और वर्ग के आधार पर महिलाओं के अनुभवों में विविधता को पूरी तरह समझ पाना कठिन है।

इसके बावजूद, यह शोध महत्वपूर्ण है क्योंकि यह इतिहास लेखन में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह दर्शाता है कि यदि हम लिंग आधारित विश्लेषण का उपयोग करें तो ऐतिहासिक घटनाओं की नई समझ विकसित हो सकती है [33]।

निष्कर्ष

इस शोध से स्पष्ट होता है कि चौरी-चौरा कांड में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण थी, भले ही आधिकारिक अभिलेखों में इसे पर्याप्त रूप से दर्ज नहीं किया गया। महिलाओं ने प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूपों में इस घटना में भाग लिया [34]। वे जुलूस में शामिल थीं, नारे लगा रही थीं, शराब की दुकानों का बहिष्कार कर रही थीं, और घायलों की सेवा कर रही थीं।

लिंग, श्रम और प्रतिरोध के बीच एक जटिल संबंध था। ग्रामीण महिलाओं का अदृश्य और अवैतनिक श्रम उनके शोषण का आधार था, जिसने उनमें असंतोष पैदा किया [35]। असहयोग आंदोलन ने इस असंतोष को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान किया। उनका प्रतिरोध केवल राष्ट्रीय मुक्ति के लिए नहीं था, बल्कि यह उनकी अपनी मुक्ति के लिए भी था।

इस शोध का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास को लिंग आधारित दृष्टिकोण से पुनः लिखने की आवश्यकता है [36]। परंपरागत इतिहास लेखन ने महिलाओं की भूमिका को उपेक्षित किया है, जो न केवल अधूरा है बल्कि अन्यायपूर्ण भी है। चौरी-चौरा जैसी घटनाओं में महिलाओं की भूमिका को रेखांकित करना इस ऐतिहासिक अन्याय को ठीक करने की दिशा में एक कदम है।

भविष्य की दिशाएं

इस शोध के आधार पर भविष्य में कई नए अध्ययन किए जा सकते हैं। प्रथम, चौरी-चौरा के प्रतिभागियों की महिला वंशजों का विस्तृत मौखिक इतिहास संकलित किया जा सकता है। इससे महिलाओं की भूमिका के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त हो सकती है [37]।

द्वितीय, अन्य ग्रामीण विद्रोहों में महिलाओं की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। इससे यह समझा जा सकता है कि क्या चौरी-चौरा में महिलाओं की भागीदारी अपवाद थी या यह एक व्यापक प्रवृत्ति का अंश थी [38]।

तृतीय, जाति और वर्ग के आधार पर महिलाओं के अनुभवों की विविधता का अध्ययन किया जा सकता है। विभिन्न जातियों की महिलाओं के अनुभव भिन्न थे और इस विविधता को समझना आवश्यक है। अंत में, डिजिटल मानविकी के उपकरणों का उपयोग करके उपलब्ध अभिलेखों का पुनर्विश्लेषण किया जा सकता है [39]।

संदर्भ

[1] सरकार, तनिका, "हिंदू वाइफ, हिंदू नेशन: कम्युनिटी, रिलिजन एंड कल्चरल नेशनलिज्म," इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस, 2001।

[2] अमीन, शाहिद, "इवेंट, मेटाफर, मेमोरी: चौरी चौरा 1922-1992," कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1995।

[3] फोर्ब्स, गेराल्डाइन, "वीमेन इन मॉडर्न इंडिया," कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996।

[4] चक्रवर्ती, उमा, "रिराइटिंग हिस्ट्री: द लाइफ एंड टाइम्स ऑफ पंडिता रमाबाई," जुबान, 2014।

[5] चटर्जी, पार्थ, "द नेशन एंड इट्स फ्रैगमेंट्स," प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1993।

[6] पांडेय, ज्ञानेंद्र, "द एसेंडेंसी ऑफ द कांग्रेस इन उत्तर प्रदेश," ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1978।

[7] ओमवेट, गेल, "दलित विजन्स," ओरिएंट लॉन्गमैन, 2006।

[8] भारत की जनगणना, "1921 जनगणना रिपोर्ट, संयुक्त प्रांत," सरकारी प्रेस, 1923।

[9] गांधी, मोहनदास करमचंद, "आत्मकथा अथवा सत्य के प्रयोग," नवजीवन प्रेस, 1927।

[10] ब्राउन, जुडिथ, "गांधीज राइज टू पावर," कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1972।

[11] शाहिद अमीन, "गांधी एज महात्मा," सबाल्टर्न स्टडीज III, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1984।

[12] स्कॉट, जोन वाल्च, "जेंडर एंड द पॉलिटिक्स ऑफ हिस्ट्री," कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1988।

[13] उत्तर प्रदेश राज्य अभिलेखागार, "होम डिपार्टमेंट फाइल्स, 1922," लखनऊ।

[14] गुहा, रणजीत, "सबाल्टर्न स्टडीज I," ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1982।

[15] थॉम्पसन, पॉल, "द वॉयस ऑफ द पास्ट: ओरल हिस्ट्री," ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1988।

[16] सांघारी, कुमकुम और वैद, सुदेश (संपा.), "रीकास्टिंग वीमेन," काली फॉर वीमेन, 1989।

[17] चौरी-चौरा मुकदमा अभिलेख, "सत्र न्यायालय, गोरखपुर, 1922-23," उ.प्र. राज्य अभिलेखागार।

[18] "आज" समाचार पत्र, "गोरखपुर में असहयोग आंदोलन," फरवरी 1922।

[19] इलाहाबाद उच्च न्यायालय, "एम्परर बनाम अब्दुल्ला और अन्य," 1923।

[20] मुकदमा गवाहों के बयान, "चौरी-चौरा केस रिकॉर्ड्स," 1922।

[21] स्पिवाक, गायत्री चक्रवर्ती, "कैन द सबाल्टर्न स्पीक?" मैकमिलन, 1988।

[22] "प्रताप" समाचार पत्र, "चौरी-चौरा की घटना का विवरण," फरवरी 1922।

[23] कुमार, राधा, "द हिस्ट्री ऑफ डूइंग," काली फॉर वीमेन, 1993।

[24] सरकार, सुमित, "मॉडर्न इंडिया: 1885-1947," मैकमिलन, 1983।

[25] बसु, अपर्णा (संपा.), "द चैलेंज ऑफ लोकल फेमिनिज्म्स," वेस्टव्यू प्रेस, 1995।

[26] पटेल, सुजाता, "कंस्ट्रक्टिंग रीजनल आइडेंटिटीज," ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2006।

[27] लूडन, डेविड, "रीडिंग सबाल्टर्न स्टडीज," एंथम प्रेस, 2002।

[28] बंद्योपाध्याय, शेखर, "कास्ट, प्रोटेस्ट एंड आइडेंटिटी इन कोलोनियल इंडिया," ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011।

[29] मजूमदार, आर.सी., "हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया," खंड 3, फर्मा के.एल. मुखोपाध्याय, 1963।

[30] भादुड़ी, गौतम, "फोर रिबेल्स ऑफ 1857," सबाल्टर्न स्टडीज IV, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1985।

[31] नंदा, बी.आर., "महात्मा गांधी: ए बायोग्राफी," ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1958।

[32] बर्टन, एंटोनेट, "ड्वेलिंग इन द आर्काइव," ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2003।

[33] थारू, सुजी और ललिता, के. (संपा.), "वीमेन राइटिंग इन इंडिया," ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991।

[34] हेनिंगम, स्टीफन, "पीजेंट मूवमेंट्स इन कोलोनियल इंडिया," ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी, 1982।

[35] रॉय, तीर्थंकर, "द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया, 1857-1947," ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2006।

[36] मेनन, रितु, "बॉर्डर्स एंड बाउंड्रीज," काली फॉर वीमेन, 1998।

[37] पोर्टेली, एलेसांद्रो, "द डेथ ऑफ लुइगी ट्रास्टुली," स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क प्रेस, 1991।

[38] पणिक्कर, के.एन., "अगेंस्ट लॉर्ड एंड स्टेट," ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989।

[39] ग्रेहम, शॉन एट अल., "एक्सप्लोरिंग बिग हिस्टोरिकल डेटा," इंपीरियल कॉलेज प्रेस, 2015।